PAPER - 5, UNIT - I, SEC - A (भाग -1)

Contribution of Carl Ritter

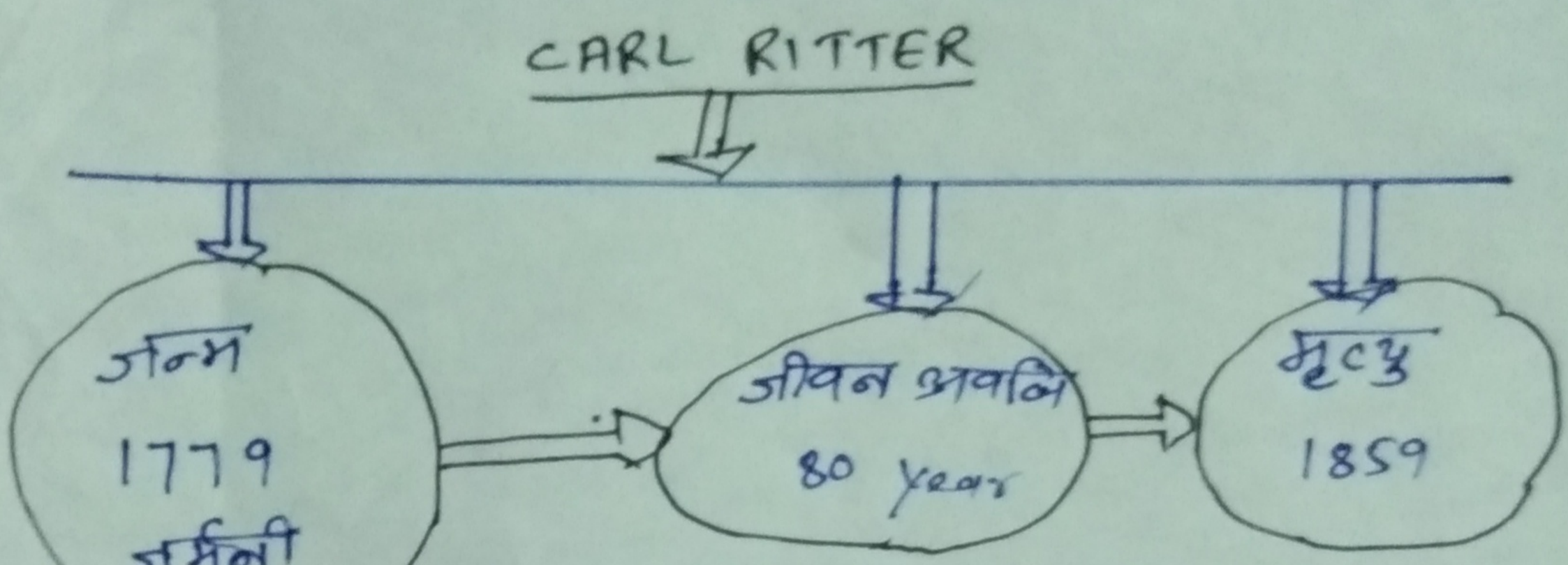

हम्बोल्ट का समकालीन रिटर आधुनिक भौगोलिक विचारधारा के संस्थापकों में एक माना जाता है। आनुभाविक विधि द्वारा भौगोलिक अध्ययन का जोरदार समर्थन करने वाला रिटर हालांकि बहुत कम ही यात्रा कर सका किन्तु बर्लिन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर के रूप मे 20 वर्षों के गहन अध्ययन के प्रतिफल ERDKUNDE ने भूगोल को इतना ऊपर उठाया कि दुनिया भर के विद्वान इसकी ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रहे। प्रकृति प्रेमी एवं ईश्वरीय आस्था वाला रिटर का पूरा जीवन ही भूगोल को समर्पित था।

जीवनी एवं शिक्षा :-

रिटर का जन्म 1779 ई० में जर्मनी के प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र —

Schnepfenthal के निकट हुआ। इसकी प्रारंभिक शिक्षा J.C.F Gutsmuths के संरक्षण मे साल्जमैन विद्यालय मे हुआ। जहाँ मानव एवं प्राकृतिक — परिवेश को समझने की ट्रेनिंग दी जाती थी। जिसके कारण रिटर के बचपन मे ही Unity in diversity का विचार विकसित हो गया था। यहाँ पर भूगोल के अतिरिक्त इसने गणित, प्राकृतिक विज्ञान, इतिहास आदि विषयों का भी अध्ययन किया। 1796-98 के बीच इन्होंने हेले विश्वविद्यालय एवं 1814-16 के बीच गोटिंगे विश्व— विद्यालय मे गणित, दर्शनशास्त्र, भूगोल इतिहास प्राकृतिक विज्ञान आदि की पढ़ाई की। 1798-1819 के बीच इन्होंने ट्यूटर रहते हुए यूरोप की यात्रा की। 1819 ई० मे ये फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय के जिमनेजियम शिक्षा केन्द्र मे इतिहास, भूगोल के प्रोफेसर नियुक्त हुए। 1820 ई० मे इन्हें बर्लिन विश्वविद्यालय एवं रॉयल सैनिक अकादमी मे एक साल भूगोल के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष बना दिया गया। जहाँ पे जीवन पर्यन्त काम करते रहे।

रिटर के भूगोल मे किए गए योगदान को निम्न शीर्षकों मे अध्ययन कर सकते हैं।

Contribution of Ritter

(i) पुस्तकों, शोधपत्रों व मानचित्र क्षेत्र मे

Year	Book/mangzeens
1804	Europe : Geographical, Historical and statistical of Geography
1806	six map on natural Landscape & resource of Europe.
1807	Research work on nature, History & man., Geography of Europe part - II
1811	several research paper on methodology.
1817	Erdkunde part - I
1822	modified form of Erdkunde
1823	Erdkunde part - II
1833	Erdkunde : A vast volume having 20,000 pages, Historical elements in Geography.

1836 :- Resource of the Earth

METHODOLOGY

रिटर ने अपनी रचनाओं एवं व्याख्याओं के अवलोकन एवं शोध के लिए कई तरह के विधियाँ बताई है।

Methodology of Ritter

1. Comparative method
2. Empirical method
3. chorological method
4. Deductive method
5. systemetic method
6. Cartographic method
7. Analytical method.

(1) Comparative method :-

भूगोल में इस विधि के वे संस्थापक माने जाते हैं। घटनाओं के कारण संबंधों को समझने के लिए रिटर ने तुलनात्मक विधि को अपनाया था। इसलिए उन्होंने अपनी ग्रंथमाला अर्दकुण्डे का उप शीर्षक सामान्य तुलनात्मक भूगोल रखा था।

(2) Empirical method :-

रिटर भूगोल को आधुनिक विज्ञान मानते थे। इनके अनुसार मेरी अध्ययन प्रणाली सिद्धांतों पर आधारित न होकर तथ्यों इनके प्रेक्षण (जाँच), एवं परिणामों पर आधारित है। अतः प्रारंभ में क्षेत्र का पर्यवेक्षण कर उसका विश्लेषण करना चाहिए फिर किसी निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए।

——:O:——

Dr. Mukul Kumar